डॉ० राकेश कुमार सिन्हा 'रवि'

जन्म तिथि : 18-01-1970

निवास : अखिलेशायन, गोदावरी, भैरो स्थान, गया

सिच्छा : एम०ए०, पी-एच०डी०,डी०जे०

परकासित पुस्तक :

1. इतिहास के ऐना में मगध
2. धरोहर मगध के (खंड–1)
3. धरोहर मगध के (खंड–2)
4. श्री भैरोस्थान दिग्दर्शिका
5. दास्तान-ए-गया
6. पंचतंत्र के कहानी

ई निबंध में मसहूर पर्यटन स्थल देव के सूरज-मंदिर के बारे में जानकारी देवल गेल हे। ई मंदिर के स्थापत्य कला, बनावट आउ सुन्दरता के बरनन तो हइये हे एकरा में, एकर ऐतिहासिक आउ पौरानिक पृस्ठभूमि भी बतावल गेल हे। एकरा बारे में प्रचलित लोक-कथा आउ वैज्ञानिक दृस्टिकोन, दुन्नो के जानकारी देवल गेल हे।

देव के सूरज-मंदिर

जब कभी मगध के चरचा होवऽ हे, तऽ देव के सूरज-मंदिर के नाम अपने आप उभर के सामने आ जाहे। कोई जमाना में मगध के राजवंस स्थापत्व आउ सिल्पकला में जे उन्नति के प्राप्त करलन हल, ओकरे सफल परिनाम हे देव के सूरज-मंदिर ज़ेकर महिमा आउ नाम सउँसे देस में हे।

मगध के भूमि सूरज पूजन के पुरान जगह हे आउ एकर सास्त्रोक्त परमान भी हे। एही चलते मगध में सूरज-मंदिर के भरमार हे, बाकि जहाँ के सूरज-मंदिर के सबसे जादे महातम हे, ऊ हे देव के सूरज-मंदिर। औरंगाबाद जिला मुख्यालय से 16 किलोमीटर दूर पर बसल देव प्रखण्ड के देव राजवंस के किला के बगल में स्थापित ई मंदिर परिसर में साल में दू बेर अदमी सबके जमघट लगऽ हे–पहिला चइती छठ में आउ दूसर बेर कतकी छठ में। धरम-करम में बिस्वास रखे वालन ई मानऽ हथ कि हिआँ सब्भे के मनोकामना जरूरे पूरा होवऽ हे।

ई मंदिर के दुआरी पर लगल एगो सिलालेख बतावऽ हे कि बारह लाख सोलह हजार बरस त्रेतायुग बीत गेला के बाद माघ सुक्ल पंचमी गुरुवार के राजा इला के बेटा एल ई मंदिर के निरमान सुरू करवयलन। एगो कथा हे कि राजा एल कुस्ठ रोग से पीड़ित हलन आउ उनकर हियें के कुण्ड के पानी से उद्धार होयल। एही से हियाँ के कुण्ड (सूरज-कुण्ड) भी बड़ महात्तम के हे।

जानकारी मिलऽ हे कि मगध में मग ब्राह्मण लागी सिल्पी श्री विस्वकर्मा रातो-रात जे तीन गो मंदिर बनयलन हल, ओकरा में देव के मंदिर सबसे जादे आकर्सक, भव्य आउ विसाल हे, बाकी दूगो 'उमगा' आउ 'देवकुण्ड' के मंदिर बतावल जाहे।

आज जे हमनी देव के सूरज-मंदिर देखइत ही, ऊ कोई 1000 बरिस पुरान हे जेकर नव-संस्कार उमगा के सूरज मंदिर के बनावेवाला राजा भैरवेन्द्र 1450 ई० के लगभग करवैलन। ई मंदिर से जुड़ल सबसे अलग जे बात हे, ऊ ई कि एकर दुआरी पूरब भर न होके पच्छिम भर के हे। काहे ? एकरा में बड़ी मत-मतांतर हे। कहल जाहे कि एक बेर औरंगजेब के सेनापति काला पहाड़ हिआँ अयलन आउ मंदिर के धन-दौलत लूट के एकर विनास करेला चाहलन। जब पुजारी आउ आस-पास के अदमी मना कैलन, तब ऊ कहलन कि अगर ई देओता में ताकत हे, तऽ दुआरी राते-रात पच्छिम हो जाए। बस रातो-रात भयंकर गड़गड़ाहट के साथ दुआरी पलट गेल। आजो हिआँ जाए के रूख पच्छिमे दन्ने से हे बाकि इतिहासकार लोग के निगाह में देस-दुनिया में उच्च प्रतिस्ठा पावे लेल ई मंदिर के दुआरी पच्छिम में बनावल गेल। सच का हे से कहना मुस्किल हे। अइसे मगध में अइसन दू-चार गो मंदिर हे जेकर रुख पच्छिम दन्ने हे। एकरा में माधवपुर (टिकारी) के देवीथान परमुख हे जेकर आवे–जाए के रस्ता पच्छिम दन्ने से हे।

ई मंदिर के सामने के देवाल पर भगवान गणेश के मुरती हे जेकर ऊपर मुँह फाड़ले सिंह आउ दायाँ–बायाँ भी सिंह बनल हे। अन्दर से मंदिर तीन भाग में बँटल

हे जेकर तिसरका भाग में सूरज भगवान के तीनों रूप के मुरती करिया चमकदार पत्थर के बनल हे। लगभग 100 फीट ऊँचा ई मंदिर के निरमान बिना गारा सिमेंट के आयताकार, त्रिभुजाकार, गोलाकार आउ जहाँ-तहाँ वर्गाकार कटल पत्थर के जोड़ के बनावल गेल हे।

कुछ लोग देव मंदिर के उड़ीसा सैली के मंदिर, तऽ कुछ 'महाबोधि', तऽ कोई 'कोचेस्वर महादेव' मंदिर के निरमान पद्धति पर आधारित बतावऽ हथ, जबकि सच्चाई ई हे कि सउँसे देस में देव के सूरज मंदिर अनूठा हे जेकरा बनावे में उड़ीसा सैली, मगध सैली आउ बौद्ध मंदिर के मिलल रूप परभावी रहल हे।

ई मंदिर के कला सैली से परभावित होके हिआँ महान् भारतीय यायावर राहुल सांकृत्यायन अयलन हल। मंदिर के चहारदीवारी में चुनल पुरान-पुरान मुरती, बड़गर हवनकुण्ड आउ पत्थर के फलक एकर प्राचीनता के मूक गवाह हे। जी.टी. रोड पर 1983 में 'देवद्वार' बनल हल आउ 1986 से 'देव सूरज मंदिर धार्मिक न्यास समिति' हिआँ के विकास लेल लगल हे। अइसे पर्यटन विभाग के काम भी सराहे जुकुर हे, जे हिआँ हरेक साल 'देव महोत्सव' के आयोजन करके अच्छा काम करइत हे।

सच्चो ई मंदिर मगध के सांस्कृतिक विरासत के एगो अनूठा गौरव गाथा हे। इहाँ पहुँचतहीं लगऽ हे कि छठ के गीत कान में गूँज रहल हे आउ सूरज देव अकास में खड़ा होके सुन रहलन हे—

छठ गीत

सात कोठरिया जी दीनानाथ, सोवरन केवाड़,
लिपिये-पोतिये दीनानाथ, चउकठ धैले ठाड़।
सब्भे के डलिअवा जी दीनानाथ, कैले विचार,
हमरो डलिअवा जी दीनानाथ, धैले तमाये।
सासू मोरा मारे दीनानाथ, ननद नोचे गाल,
हे निर्धन पुरुखवा जी दीनानाथ, धरे तरुआर।
चुप रहूँ, चुप रहूँ बाँझी, पटोरवा पोछऽ लोर,
तोहरो के देबो बाँझी, सौदागर अइसन पूत।
सासू तोरा दुलरइतो, ननदिया माँगतो दान,
निर्धन पुरुसवा गे बाँझी, हिरदा लेतो लगाय।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) देव-मंदिर के सूरज कुंड के महातम बतावऽ।
   (ख) देव के सूरज-मंदिर कहाँ पर बनल हे?
   (ग) देव में भक्त लोग के जमघट कब-कब लगऽ हे?
   (घ) सिलालेख के अनुसार देव के सूरज-मंदिर के निरमान के काल बतावऽ।
   (ङ) सूरज मंदिर के निर्मान कउन सुरू करवैलन हल?
   (च) एगो दोसर 'छठ-गीत' गाके किलास में सुनावऽ।

लिखित :

1. राकेश कुमार सिन्हा 'रवि' के परिचय संक्षेप में बतावऽ।
2. विस्वकर्मा जी रातो-रात कउन-कउन तीन गो मंदिर बनयलन हल।
3. 'रातो-रात पूरब के दुआरी पच्छिम हो गेल।' ई कथा के विस्तार से बतावऽ।
4. गणेश जी के मंदिर में कउन-कउन आकार के पत्थर लगल हे ?
5. देव-मंदिर के निरमान कउन कलात्मक सैली में करल गेल हे ?
6. ई मंदिर के प्राचीनता के गवाही कउन-कउन वस्तु दे रहल हे ?
7. देवद्वार के निरमान कब होयल ?
8. पर्यटन विभाग के योगदान पर प्रकास डालऽ।
9. संदर्भ सहित व्याख्या करऽ :
   सच्चो ई मन्दिर मगध के सांस्कृतिक विरासत के एगो अनूठा गौरव-गाथा हे।
10. नीचे लिखल वाक्य के आसय बतावऽ:
    बाकि इतिहासकार लोग के निगाह में देस दुनिया में उच्च प्रतिस्ठा पावे लेल ई मंदिर के दुआरी पच्छिम बनावल गेल।
11. पाठ में आयल 'छठ-गीत' के भाव बतलावऽ।

भासा-अध्ययन :

1. स्थापत्यकला आउ सिल्प कला के अलावे आउ कउन-कउन कला हे?

2. मन्दिर के निरमान आउ बेवस्था से जुड़ल पाँच गो व्यक्ति आउ संस्था के नाम बतावऽ

3. 'जाए के रस्ता पच्छिम दन्ने से हे'— वाक्य के विस्तार करऽ।

4. नीचे लिखल सबद के विस्तार से समझावऽ :—
यायावर, महाबोधि, औरंगजेब, गणेश, त्रेतायुग, विस्वकर्मा, राजवंस, धार्मिक न्यास समिति, देव-महोत्सव

योग्यता-विस्तार :

1. बतावऽ कि इगरहवाँ किलास के छात्र या छात्रा लोग मेला में सेवा सिविर लगाके कउन-कउन सेवा कर सकऽ हथ।

2. अइसने मन्दिर के बरनन करइत बिदेस में पढ़इत अप्पन दोस्त के एगो चिट्ठी लिखऽ।

3. मन्दिर के बारे में जे दन्त कथा हे, आज ऊ केतना सच मानल जायत आउ ओकरा बारे में वैज्ञानिक मत का हो सकऽ हे ?

सब्दार्थ :

उन्नति	—	बढ़न्ती
परिनाम	—	फल
भरमार	—	बहुत जादे
जमघट	—	भीड़/मेला
कुंड	—	तलाव
पूरब भर	—	पूरब दिसा / पूरब तरफ
मुँह फाड़ले	—	मुँह खोल के
यायावर	—	पर्यटक / घुमक्कड़
अनूठा	—	अतुलनीय
गाथा	—	कहानी